पाठ-16

अमृत वाणी

मधुर बचन है औषधी, कटुक बचन है तीर।
स्रवन द्वार ह्वै संचरै, सालै सकल सरीर।।1।।
बुरा जो देखन मैं चला, बुरा न मिलिया कोय।
जो दिल खोजा आपना, मुझ-सा बुरा न कोय।।2।।
गुरु कुम्हार सिष कुंभ है, गढ़ि गढ़ि काढ़ै खोट।
अंतर हाथ सहार दै, बाहर बाहै चोट।।3।।
जाति न पूछो साधु की, पूछि लीजिए ज्ञान।
मोल करो तलवार का, पड़ा रहना दो म्यान।।4।।
निंदक नियरे राखिए, आंगन कुटी छवाय।
बिन पानी साबुन बिना, निरमल करै सुभाय।।5।।
दुख में सुमिरन सब करै, सुख में करै न कोय।
जो सुख में सुमिरन करै, तो दुख काहे होय।।6।।

– **संत कबीरदास**

तरुवर फल नहिं खात है, सरवर पियहिं न पान।
कहि रहीम पर-काज हित, संपति संचहिं सुजान।।1।।
रहिमन बिपदा हु भली, जो थोरे दिन होय।
हित अनहित या जगत में, जानि परत सब कोय।।2।।
रहिमन निज मन की बिथा, मन ही राखहु गोय।
सुनि इठिलैंहै सब लोग, बांटि न लैहै कोय।।3।।
रहिमन निज संपति बिना, कोउ न बिपति सहाय।
बिनु पानी ज्यों जलज को, रवि नहिं सकै बचाय।।4।।
रहिमन देखि बड़ेन को, लघु न दीजिए डारि।
जहाँ काम आवै सुई, कहा करै तरवारि।।5।।
जे गरीब पर हित करै, ते रहीम बड़ लोग।
कहा सुदामा बापुरो, कृष्ण मिताई जोग।।6।।

– **कवि रहीम**

आओ, जानें :

संत कबीरदास हिंदी के एक लोकप्रिय कवि हैं। उन्होंने जनता के बीच रहकर जनता की भाषा में जनता के लिए कविता की। वे मूलतः एक भक्त-कवि हैं। निर्गुण-निराकार राम उनके आराध्य रहे। 'कबीर' शब्द का अर्थ है- बड़ा, श्रेष्ठ, महान। सचमुच महात्मा कबीरदास महान कवि हैं। उनका जन्म काशी में 1398 ई. को हुआ था। 1518 ई. को मगहर नामक स्थान में उनका देहावसान हुआ। उनकी कविता अमृतमय वाणी के समान है, जिससे हमें अच्छी सीख मिलती है।

संत-कवि कबीरदास का कहना है कि- (1) मधुर वचन औषधि के समान है, जबकि कड़वा वचन नुकीले वाण की तरह है। यह वाण कान के रास्ते से भीतर घुसता है और पूरे शरीर को दुःख देता है। (2) जब मैं बुरा आदमी ढूँढ़ने निकला, तो एक भी बुरा व्यक्ति नहीं मिला। जब मैंने अपने दिल में खोजा, तो पाया कि मुझ जैसा बुरा और कोई नहीं। (3) गुरु कुम्हार की तरह और शिष्य घड़े की तरह होते हैं। गुरु-रूपी कुम्हार भीतर से हाथ का सहारा देकर बाहर धीरे-धीरे प्रहार करते हुए शिष्य-रूपी घड़े को बनाते हैं और उसकी कमियों को दूर करते हैं। (4) साधु की जाति के बारे में नहीं, बल्कि उनके ज्ञान के बारे में पूछना चाहिए। तलवार को रखे जाने वाले म्यान को नहीं, अपितु तलवार को महत्व दिया जाना चाहिए। (5) निंदा करने वाले व्यक्ति को आंगन में कुटिया बनाकर पास ही रखना चाहिए। तब वह व्यक्ति बिना पानी और साबुन के हमारे स्वभाव को निर्मल बनाता रहेगा। (6) सब लोग दुःख की स्थिति में अपने आराध्य का स्मरण करते हैं, सुख की स्थिति में कोई भी उनको याद नहीं करता। अगर कोई सुख की स्थिति में भी अपने आराध्य का स्मरण करे, तो उसे भला कैसे दुःख होगा। कबीरदास जी के ये कथन बिल्कुल सच हैं।

नीति के कवि रहीम जी का पूरा नाम है- **अब्दुर्रहीम खानखाना**। उनका जन्म 1556 ई. को हुआ था। वे मुगल सम्राट अकबर के मंत्री बैरम खाँ के पुत्र थे। वे एक तरफ राज-कार्य में निपुण थे, तो दूसरी तरफ अच्छी कविता भी करते थे। कवि गोस्वामी तुलसीदास से उनकी गहरी मित्रता थी। कवि रहीम बड़े दानी भी थे। कहते हैं कि कवि गंग को उनकी एक रचना पर रहीम जी ने छत्तीस लाख रुपए दिए थे। 1638 ई. को उनकी मृत्यु हुई।

कवि रहीम के नीतिपरक दोहे अमृतमय वचनों के समान हैं। उनसे हमें तरह-तरह की सीखें मिलती हैं। उन्होंने कहा है कि- (1) पेड़ अपना फल नहीं खाता, सरोवर अपना जल नहीं पीता। इसी तरह ज्ञानी व्यक्ति भी दूसरों की भलाई के लिए संपत्ति का संचय करते हैं। (2) कम दिनों के लिए आने वाली विपत्ति भली होती है। क्योंकि ऐसे समय में हमारे हित और अहित चाहने वालों की पहचान होती है। (3)हमें अपने मन की व्यथा मन में ही छिपाकर रखनी चाहिए। ऐसा इसलिए कि दूसरे व्यक्ति सुनकर नखरे ही करते हैं, कोई उसे बाँट नहीं लेता। (4) विपत्ति के समय अपना साधन ही काम आता है, कोई दूसरा हमारा सहायक नहीं बनता। ऐसा कमल जिसके आस-पास जल न हो, सूरज उसकी रक्षा नहीं कर सकता। (5) बड़े को देखकर छोटे को छोड़ नहीं देना चाहिए। क्योंकि जहाँ सुई काम आती है, वहाँ तलवार क्या करेगी। (6) गरीबों की मदद करने वाले ही सच्चे अर्थ में बड़े लोग होते हैं। गरीब ब्राह्मण सुदामा और द्वारका के अधिपति श्रीकृष्ण में कहा बराबरी थी? परंतु कृष्ण ने बचपन की मित्रता को आगे भी निबाहा। कवि रहीम के ये सारे कथन आज भी हमारे लिए बड़े ही उपयोगी हैं।

अभ्यास-माला

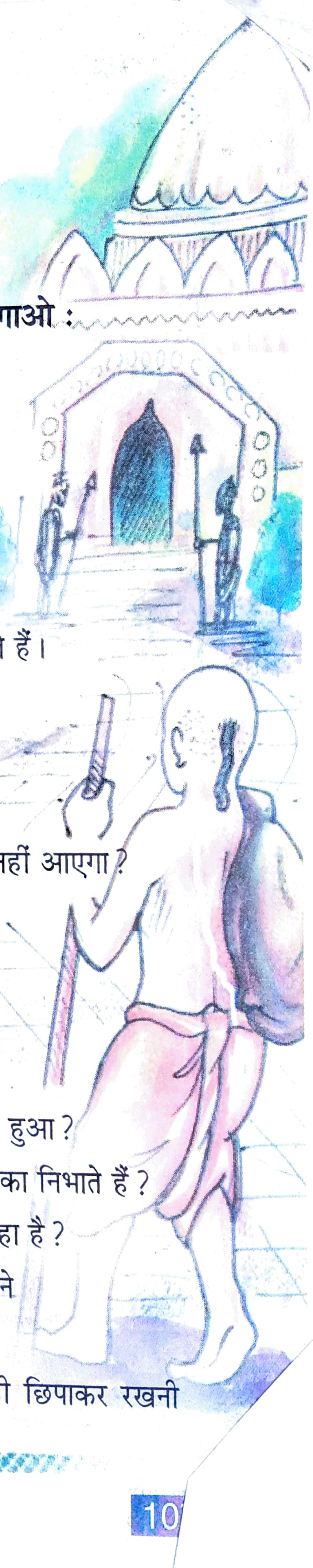

पाठ से

1. सही कथन के आगे ☑ और गलत कथन के आगे ☒ निशान लगाओ :

(क) मधुर वचन औषधि के समान आरामदायक होता है।

(ख) निंदा करने वाले व्यक्ति से हमें दूर रहना चाहिए।

(ग) ज्ञानी व्यक्ति अपने लिए धन का संचय करते हैं।

(घ) हमें अपना दु:ख अपने मन में ही छिपाकर रखना चाहिए।

(ङ) सुई का काम तलवार कर सकती है।

(च) गरीबों की मदद करने वाले ही सच्चे अर्थ में बड़े व्यक्ति होते हैं।

2. पूर्ण वाक्य में उत्तर दो :

(क) संत कबीरदास के आराध्य कौन थे?

(ख) 'कबीर' शब्द का अर्थ क्या है?

(ग) कवि के अनुसार क्या करने पर हमारे जीवन में दु:ख कभी नहीं आएगा?

(घ) कवि रहीम का पूरा नाम क्या था?

(ङ) किनके साथ कवि रहीम की गहरी मित्रता थी?

(च) श्रीकृष्ण ने किसके साथ बचपन की मित्रता निभायी थी?

3. संक्षेप में उत्तर दो :

(क) बुरे व्यक्ति की खोज में निकलने पर कवि को क्या अनुभव हुआ?

(ख) अपने शिष्य को बनाने में गुरु किस प्रकार कुम्हार की भूमिका निभाते हैं?

(ग) साधु की जाति के बारे में पूछने के संदर्भ में कवि ने क्या कहा है?

(घ) कवि रहीम ने ऐसा क्यों कहा है कि थोड़े दिनों के लिए आने वाली विपत्ति अच्छी होती है?

(ङ) कवि के अनुसार हमें मन की व्यथा किसलिए मन में ही छिपाकर रखनी चाहिए?

4. **लघु उत्तर दो :**

(क) संत कबीरदास का परिचय दो।

(ख) कवि रहीम का परिचय प्रस्तुत करो।

(ग) निम्नांकित साखी का सरल अर्थ लिखो :

मधुर बचन है औषधि, कटुक बचन है तीर।
स्रवन द्वार है संचरै, सालै सकल शरीर।।

(घ) निम्नलिखित दोहे को गद्य-रूप दो :

रहिमन देखि बड़ेन को, लघु न दीजिए डारि।
जहाँ काम आवै सुई, कहा करै तरवारि।।

5. **निम्नांकित दोहों के भावार्थ लिखो :**

(क) निंदक नियरे राखिए, आंगन कुटी छवाय।
बिन पानी साबुन बिना, निरमल करै सुभाय।।

(ख) रहिमन निज संपति बिना, कोउ न बिपति सहाय।
बिनु पानी ज्यों जलज को, रवि नहिं सकै बचाय।।

पाठ के आस-पास

1. पाठ में आए दोहों को कंठस्थ करो। फिर कबीरदास और रहीम द्वारा रचित ऐसे ही और दोहों का संग्रह करके अपने सहपाठियों के साथ अंत्याक्षरी खेलो।

2. गोस्वामी तुलसीदास के निम्नलिखित दोहे को पढ़ो और समझो :

तुलसी मीठे बचन तें, सुख उपजत चहुँ ओर।
बसीकरन यह मंत्र है. परिहरु बचन कठोर।।

– अब कबीरदास के संबद्ध दोहे के साथ इसकी तुलना करो।

3. पाठ में संकलित रहीम के छठे दोहे में गरीब ब्राह्मण सुदामा और द्वारका के अधिपति श्रीकृष्ण की मित्रता का प्रसंग आया है। श्रीकृष्ण ने अपने बचपन के मित्र सुदामा की निर्धनता दूर की थी। ऐसे ही कवयित्री मीराँबाई पर भी श्रीकृष्ण की असीम कृपा थी। राजघराने की बहू होकर भी कृष्ण-भक्ति में लीन रहने के कारण मीराँबाई के देवर राणा

विक्रमसिंह ने जहर का प्याला और साँप का पिटारा भेजकर उन्हें मरवाना चाहा था। परंतु ऐसी विपत्तियों में प्रभु कृष्ण ने मीराँबाई की रक्षा की थी। वे गाती थीं – 'मीरा के प्रभु गिरधर नागर.......।'

– अब तुमलोग मीराँबाई के जीवन और उनकी रचनाओं के बारे में अधिक जानकारी एकत्र करो।

भाषा-अध्ययन

1. संत कबीरदास की कविता की भाषा को 'सधुक्कड़ी' अथवा खिचड़ी कहा जाता है। इसमें खड़ीबोली, ब्रज, अवधी, राजस्थानी आदि हिंदी की बोलियों का मिश्रण है। कवि रहीम के दोहों की भाषा ब्रज है। ब्रज वस्तुतः हिंदी भाषा की एक बोली है। हिंदी की मुख्यतः सत्रह बोलियाँ हैं। शिक्षक/शिक्षिका की सहायता से इन बोलियों के नाम जान लो।

2. संस्कृत भाषा से ही कालांतर में हिंदी भाषा का विकास हुआ। परंतु हिंदी में संस्कृत के कुछ शब्द हू-ब-हू प्रयुक्त होते हैं। ऐसे शब्दों को 'तत्सम' (उसके अर्थात संस्कृत के समान) कहते हैं, जैसे- ज्ञान, कर्म, अमृत, वाणी इत्यादि।

   अब तुम पाठ में प्रयुक्त निम्नलिखित शब्दों के तत्सम रूप लिखो :

   बचन, स्रवन, सरीर, सिष, सुमिरन, बिथा

3. **निम्नलिखित शब्दों के विपरीतार्थक शब्द लिखो :**

   बुरा, साधु, ज्ञान, निर्मल, भली, गरीब, मित्र

योग्यता-विस्तार

1. संत कबीरदास ने 'गुरु कुम्हार सिष कुंभ है, गढ़ि गढ़ि काढ़ै खोट' कहकर शिष्य को बनाने में गुरु की महत्वपूर्ण भूमिका की बात की है।

   – तुमलोग आगामी 'शिक्षक दिवस' के अवसर पर गुरु-शिष्य संबंध विषय पर सम्यक रूप से चर्चा करो। इस मौके पर अपने विद्यालय के अवकाश-प्राप्त शिक्षक-शिक्षिका के घर जाकर उनका उचित सम्मान करो।

2. कवि रहीम ने कहा है कि पेड़ फल नहीं खाता, बल्कि दूसरों के लिए संचित करके रखता है। इसी प्रकार सरोवर अपना जल नहीं पीता, अपितु दूसरों के लिए बचाकर

रखता है। ऐसे परोपकारी पेड़ हमें नहीं काटने चाहिए और सरोवर के जल को प्रदूषित नहीं करना चाहिए।

– तुमलोग अपने–अपने इलाके में 'पेड़ की कटाई' और 'जल–प्रदूषण' के विरुद्ध जागरूकता लाने का प्रयास करो।

कवि रहीम ने और कहा है कि ज्ञानी व्यक्ति दूसरों की भलाई के लिए संपत्ति का संचय करते हैं। सचमुच संचय करना एक अच्छी आदत है। तुमलोग भी जेब–खर्च के लिए मिलने वाले पैसों में से थोड़ी बचत करने की कोशिश करो। फिर एकत्रित रकम से पास वाले डाकघर अथवा बैंक में अपने नाम पर बचत खाता खोलो।

आओ, पाठ में आए कुछ शब्दों के अर्थ जानें :

शब्द		अर्थ	शब्द		अर्थ
औषधी	=	औषधि, दवा	गोय	=	छिपाकर
तीर	=	वाण	इठिलैंहै	=	इठलाता है, नखरे करता है, बहाने बनाता है
स्रवन	=	श्रवण, कान			
सालै	=	सालता है, दुःख पहुँचाता है	जलज	=	कमल, पंकज
			बापुरो	=	बेचारा, निर्धन ब्राह्मण
कोय	=	कोई	मिताई	=	मित्रता
सिष	=	शिष्य	निर्गुण	=	जिनके गुणों की गणना नहीं की जा सकती
कुंभ	=	घड़ा			
बाहै	=	चलाते हैं	देहावसान	=	मृत्यु
नियरे	=	पास, नजदीक	सीख	=	शिक्षा, जानकारी
सुभाय	=	स्वभाव	साखी	=	साक्षी, संत कबीरदास द्वारा विरचित दोहे
सुजान	=	ज्ञानी व्यक्ति			
बिथा	=	व्यथा, दुःख	दोहा	=	हिंदी का एक लोकप्रिय छन्द